मकै रों लावा

(बाल-कविता संग्रह)

मकै रौं लावा

डॉ. आभा पूर्वे



ISBN : ९७८.८१.१८१००५.०.८

प्रथम संस्करण
२०२६

सर्वाधिकार ©
लेखकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
एक सौ पचास रूपये मात्र

Makai Ro Lawa (Poems) Rs.-150/-
By Dr. Abha Purbey

रितु (पुत्री)
शुभम् (पुत्र)
धृति नागराजू (नतनी)
वास्तें ई संग्रह

—आभा

ई बाल-कविता संग्रह लेली

साल भरी पहलकों बात छेकै। डॉ. अमरेन्द्र से पता चललै कि हिनी अपनों अंगिका बाल-गीत के संग्रह निकाली रहलों छै, जेकरों शीर्षक होतै, 'चकै के चकधुम'। तखनिये हमरो मनों में होलै कि हम्मू छोटों-छोटों बाल कविता लिखवै, जेकरों शीर्षक होतै, 'मकै रों लावा'।

ई शीर्षक बालगीत लें बेसी व्यंजक छै, आरो फेनु कवितो लिखना शुरू करलियै, पहलें हिन्दी में, बाद में अंगिका में। अंगिका बालगीत कें फेसबुक पर प्रशंसो मिल्लै, तें उत्साहित होय कें ऊ सब कविता के ई छोटों रं संग्रह में छापी रहलों छियै। ऊ भी अपनी धृति नागराजू के लगातार जिद पर, जे मुम्बई में रहै छै, अंग्रेजी इस्कूल में पढ़ै छै, मतर अपनी नानी के मातृभाषा कें नानीये रं चाहै छै।

हमरौ कम सुख नै मिलतै 'मकै रों लावा' जबें छपी कें ऐतै। तोरों सिनी के प्रशंसा तें हमरा मिलतै रहलों छै, फेनु मिलतै, यहा विश्वास छै।

—आभा

महालया, दुर्गापूजा
१० अक्टूबर २०२६ ई.

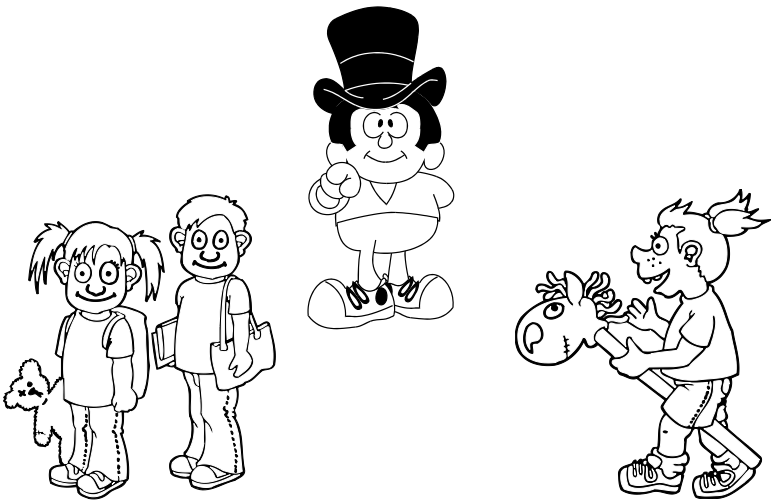
सम्पर्क : संपादक, नया हस्तक्षेप
शरद चंद पथ, मशाकचक,
भागलपुर, बिहार, पिन-८१२००२

अंगिका बाल-कविताएँ



चार चौवन्नी

चार चौवन्नी कत्तें टाका
भागलपुर सें कन्नें बाँका?
कन्नें गोड्डा-देवघर छै?
कैठां काँवरे-काँवर छै?
अंग देस में कत्तें धाम?
औंगरी पर गिनलें जो नाम!
कैठां चंपा राज विराजै?
विहुला माय रों तुतरू बाजै?

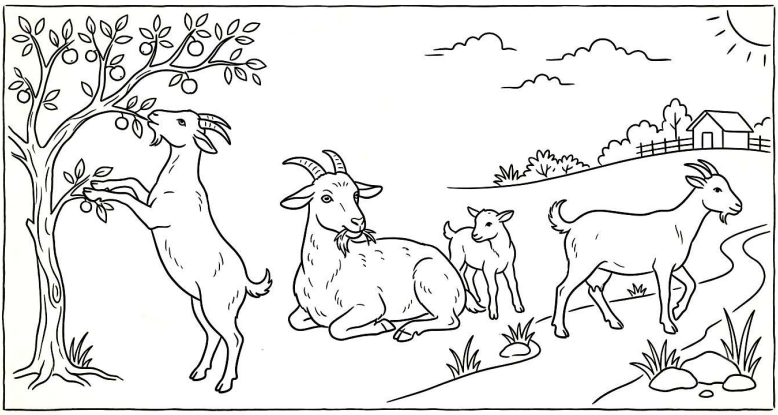




भालू

कारों, उजरों, भूरा भालू
बुद्धि में ई कम नै चालू
कुछुओ दौ, सब निगली जैथौं
घास रहौ कि छाल, चबैथौं
पर शहदों पर लगले ध्यान
ग्यानी कम नै, कम नै ग्यान
दरबन दै जंगल में धुरछक
एकरा देखी, के नै धकधक
नाँचै-कूदै बच्चा लेली
पार करी जाय नद्दी हेली।

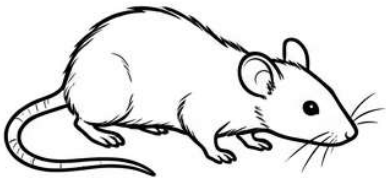




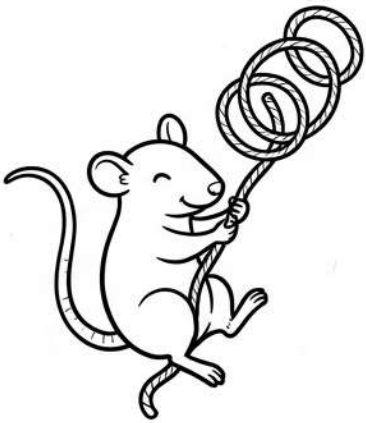
बकरी

उर्र्र बकरिया घास खो
भालू रँ मोटैलें जो
गैये नाँखी दूध दे
कन्नें भागैं, हे गे हे
जोरी देभौ खुट्टा सें
चाल बिगड़लौ छुट्टा सें
मिमयैतें रहबे, नै खोलबौ
आरो तोरा सें नै बोलबौ।

मूसों



बित्तों भर जंत नै
रातो कें तंत नै
खोदी दै पर्वत कें
राकस नै, संत नै।
एकदम सलेटी रँ
घूमै छै नंग-धड़ंग
कत्तो कोय दूसो
धत् तोरी—मूसो!





गुरूजी आरो चटिया (१)

गुरूजी :

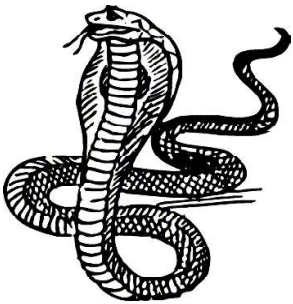
के खोता में रात बिताबै
के खोड़र में जागै
केकरों जिनगी बिल में बीतै
के नद्दी पर भागै?

चटिया :

खोता में आरो चिड़ियाँ सब
सुग्गा के घर खोड़र
बिल में साँप, छुछुन्दर, मूसो
भागै जलचर जल पर।

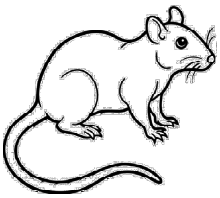
गुरूजी :

बेंग, मगर, आ मछली?



चटिया :

तीनो लेली नद्दी।





गुरूजी :

केकरों बास माँद में होय छै
के गाछों पर झूमै?
केकरा डोंर जरो नै केकरो
मस्ती में छै घूमै?

चटिया :

गीदड़ वास करै छै खोह में
बानर गाछ पें झूमै
भालू, बाघ डरै नै कोय सें
जंगल-जंगल घूमै।





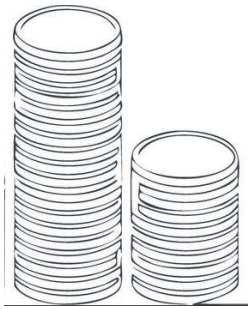
दिशा आरो दिशापति

गुरूजी :

कोन दिशा में इन्द्र विराजै
कोन दिशा में देव वरुण
कोन दिशा छेकै कुबेर के
कोन यमो के? कहें अरुण!

एक चटिया :

पूबें इन्द्र विराजै गुरु जी
पच्छिम रहै वरुण जी, तय छै
होने उत्तर बस कुबेर लें
यम दक्षिण में ई निश्चय छै।



गुरूजी :

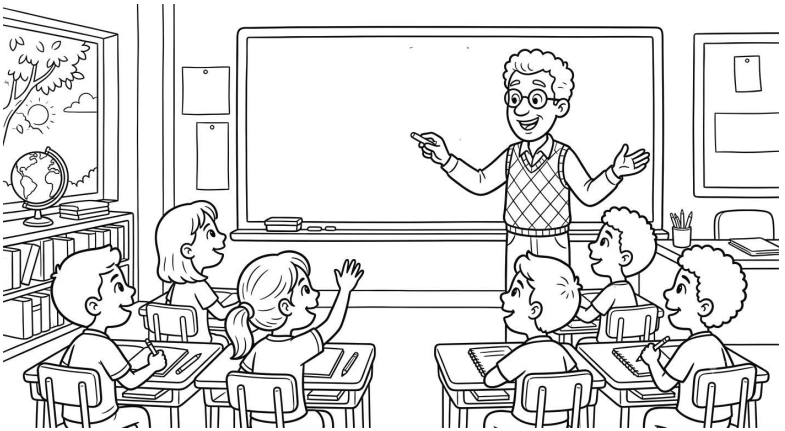
कोन काम लें इन्द्र देवता
कहैं कथी लें देव वरुण
की कुबेर-यम एक्के छेकै
बोल, बोल! नै माथों धुन!

चटिया सिनी :

बरखा लेली इन्द्र देवता
जल लें जना वरूण जी छेकै
जना धनों के देव कुबेरे
न्याय देवता यम ही छेकै।

गुरूजी :

ठीक बतैलें, जो, घर जो!
दाल, भात, तरकारी खो!



चूहा



चूहा कहों कि मूषक, मूसो
पोसै के लायक नै—दूसो

मूँछ मरद सें कम नै एकरो
साफ रहें, तहियो अनसेधरो

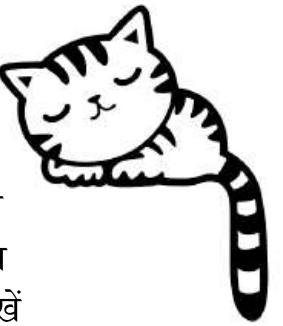
नै पकड़ावै जों निकलै छै
मुसकल पर सीधे उछलै छै

पाँच इंच के ई जे जंतु
रातो घुमतें रहै घुमंतु

नींद नै आवें दिएँ, अधुर
रातो में भी कुटुर-कुटुर।



बिल्ली-चूहा



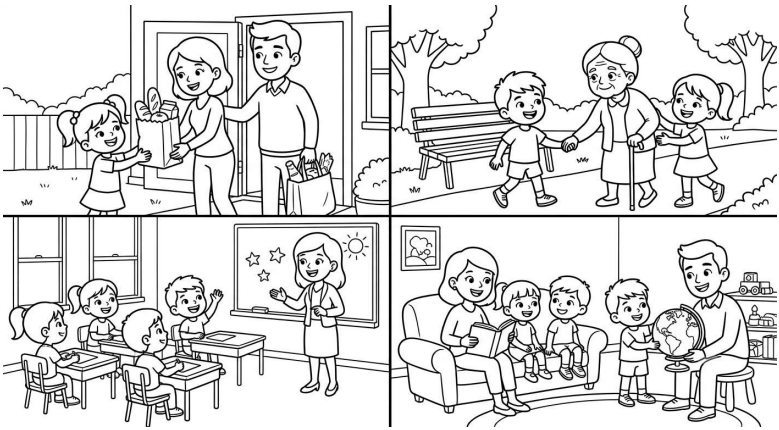
बिल्ली ऐलौ दूध नुकाव
भंसाघर के द्वार लगाव
दही कहाँ छौ ढक्की राखें
मौको नै मिलतौ कि चाखें
रोटियो ढकी कें राखी दैं
ई भोक्सी की जैथौ? नैं
मूसो ठो कत्तें उपटै छै
बिल्ली भी तें नै झपटै छै
दोस्ती दुनू में होलो छै
घर में दुनू के टोलो छै।





बढ़िया सीख

सबसें ऊँच्चोॅ माय-बाप छै
ओकरोॅ बाद छै खल्ली-पोथी
ई सब बात गुरु जी बोलै
मन में लैं, ई सब कें खोसी
पोथी पढ़ी-पढ़ी कें गुनियोॅ
माय-गुरु के महिमा बुझियोॅ
जौनें घर सें देश दिखावै
भाँगटोॅ देखै जहाँ; मिटावै
बाबू सुख के झुलवा छेकै
दादी टुकटुक घर कें देखै
मामा के तें बात अलग छै
काका देखी, दिल धक्-धक् छै।



तुक्तक

बेली, अड़हुल, चीरा-मीरा
सौंफ लगै, जेहनों कि जीरा
रजनीगंधा, बेला, चंपा
खूब बजावैं डमरू-डंफा
गेंदा, गुलमोहर, गुलदौदी
दौड़ैं नै तोंय रौदी-रौदी
खिलतै अबकी खूब परास
इखनी तें बस कासे-कास।



उल्टा-पुल्टा

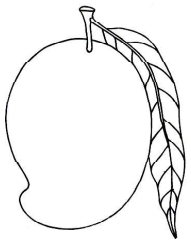
स्वर-व्यंजन में मेल दिखै नै
खेलाड़ी छै, खेल दिखै नै
एक-दूसरा कें लंग्घी मारै
अपराधी छै, जेल दिखै नै
भात अकड़लों काँटों नाँखी
तरकारी में तेल दिखै नै
सरकारी इस्कूल ई छेकौं
एक्को चटिया फेल दिखै नै
आम गाछ में फरै करैला
बेल गाछ में बेल दिखै नै।





के की खैवै

बोलें कमला, नीलम, रीता
के स्वादों में हरकट तीता
खट्टा रहथौं के मन मोहै
बिना नमक, नै कटियो सोहै
के-के खैवे आम-पपीता
कस्सी ले चोटी के फीता
फल के राजा के कहलावै
जेकरों गुण कोयल तक गावै
कोन फलों के फोंल बरोबर
दू-चारो के जैमें अक्छर।

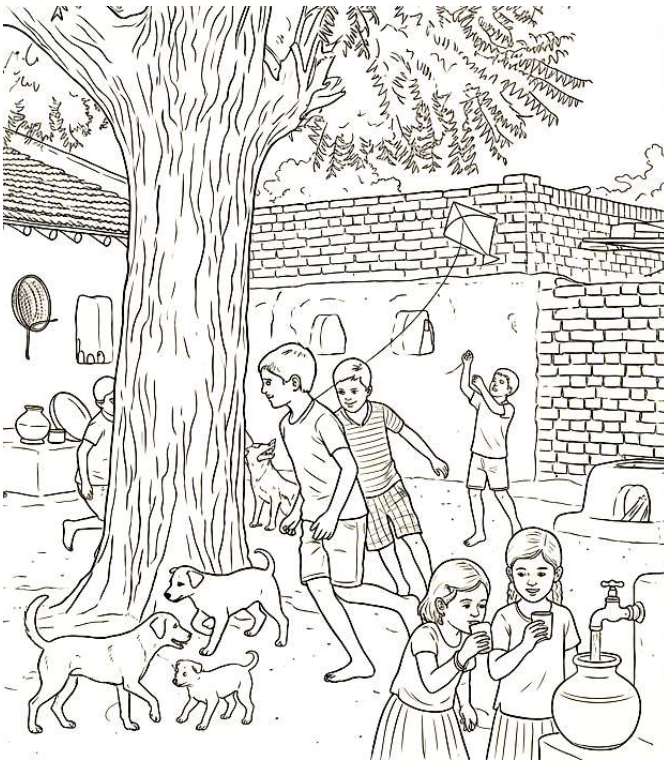


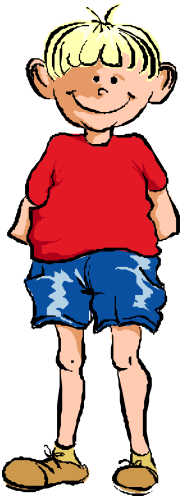




कोय लागियैं नै

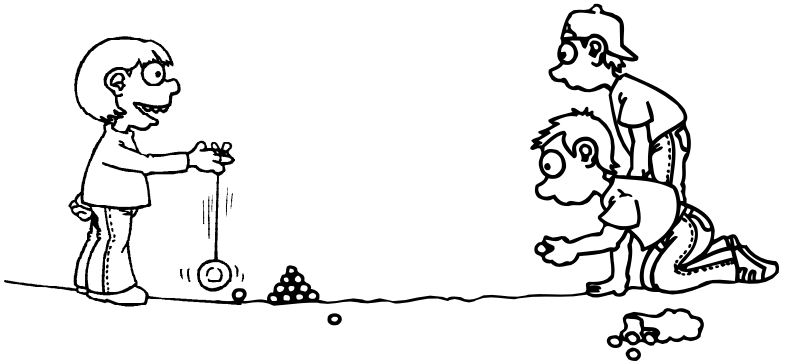
दिन भर खेलै खेल-कबड्डी
पढ़ै-लिखै में घोर फिसड्डी
बचिये कें तोरा सब रहियैं
ओकरो करौं की रं हड्डी
हमरो लुग नै एक अधेला
ओकरों लुग नोटों के गड्डी
गुरुओ तक कुछुओ नै बोलै
ऊ छौड़ा बदमाश छै बड्डी।





औका बौका

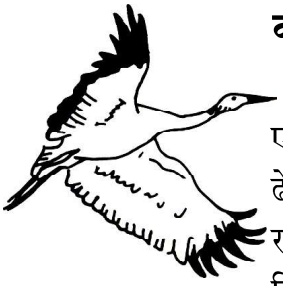
गुल्ली डंटा, अट्ठा गोटी, ईत्ती-बित्ती
केकस कहै छै कौड़ी चित्ती
घरघोटों के खेल-तमाशा
बाजै ढोलक, तड़बड़ तााशा
रस्सी पर नाँचै छै नटुआ
चोर भागलै लेल्हैं बटुआ
औका-बौका तीन तड़ौका
किरकेटों में लगलै चौका
फुटबॉलों के चलतै खेल
भाग यहाँ सें होलौ उखेल।



मातृभाषा

सूरज अपनों जग्घा घूमै
धरती चारो दिस
हिन्दी में जे मछली छेकै
अंगरेजी में 'फिस'।
हिन्दी में जे रं कि 'लोटस'
कमल बनी कें आवै
'टाइगर रोर' कत्तो नी
बाघ यहाँ गुर्राबै
कुत्तो 'बार्क' करौ, की होतै
भौंकथैं थरथर लोग
अंग्रेजी घोकै में सौ ठो
मुँह में लागै रोग
विपदा हरथौं अपनों भाषा
अपनों माय के बोली
परभाषा तें बाबू आगू
करवों छिकै ठिठोली।



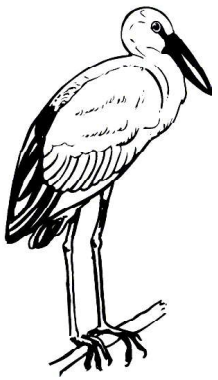


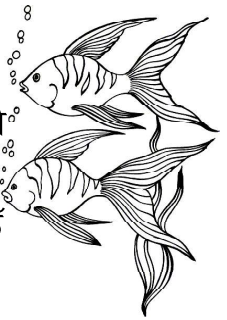
कथागीत

एक बड़ों रं पोखरिया में
ढेर किसिम के मछली छेलै
रात भरी पानी के नीचू
दिन में ऊपरे ऊपर हेलै।

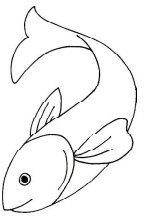
उड़लों कहीं सें बगुला इक ठो
देखी कें पोखरी पर ऐलै
एत्तें-एत्तें मछली देखी
ओकरों जीहा ठो ललचैलै

ध्यान लगाय कें बैठी रहलै
पोखर केरों इक कोनो में
सोची कें कखनू तें फँसतै
मछली चोचों के दोना में





तेज मछलियो कम नै छेलै
तैरते रहलै नीचें-नीचें
खूब लुभावै बगुला मन कें
उछली-उछली बीचे-बीचें



बगुला बढ़तै बढ़ले गेलै
धँसले गेलै कादों में
प्राण अकारथ ओकरों गेलै
भरलों पोखर भादों में।



चिकोटी गीत (१)

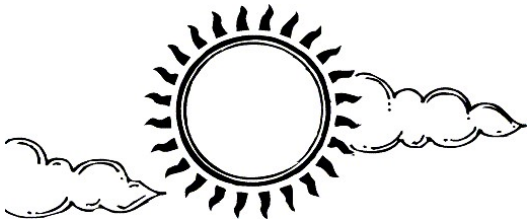
नाना केरोॅ बाल सफाचट
दिन भर बोलै पट-पट-पट
नानी के अंगरेजी गड़बड़
तहियो करै छै बड़-बड़-बड़
नाना मुँह में हरदम पान
नानी मुँह में लावा-धान
नानी कें गोस्सा जों आवै
नाना सरपट बाहर भागै।



चिकोटी गीत (२)

जे पैसा दै ऊ जर्दालु
जे नै दै कोलपद्दी आम
जेकरा पैसा केरों झकनी
ऊ कुढ़िया-पुछिया पर ढकनी
जे बच्चा कें मारै-कूटै
ओकरों माथों-ठेहुना फूटै!





सुक्खा सौन

अगर बरसतै बादल नै
नदियो करतै खलखल नै
सुक्खा-सुक्खा खेत-सरँग
पुरबा के जरियो नै संग
पत्ता करतै खट-खट-खट
चिड़ियाँ चुनमुन छटपट-छट
सुखलों रहतै सावन जों
खाँसतै उम्मस खों-खों-खों।





नानी, बादल आरो हम्में

नानी! नै बरसै छै बादल,
जाय मनैवै ओकरा, चल! चल!
पुरबा-पछिया कें साथें लें
धूप, दीया, दुबड़ी हाथें लें
गाछ-बिरिछ के साथें चल
हाँसतौ नद्दी खल-खल-खल
हमरों मन तें बरखा में
जेहनों तोरों चरखा में।

२७/८/२६



उपाय

नै पहाड़, नै जंगल-नद्दी
कहाँ करधनी, कहाँ छै बद्धी
चिड़ियो के नै खोता छै
कानै कौआ-तोता छै
कहौं दिखै नै बगुला छै
तित्तो सब रसगुल्ला छै
कहाँ नुकैलोॅ बादल छै
समझी गेलियै पागल छै
ई पागल रोॅ एक उपाय
सूरज-सागर साथेॅ जाय
तभिये सीधा होतै मेघ
नीचेॅ जंगल केरोॅ थेग।

२७/८/२६



ननिहालों के सुख

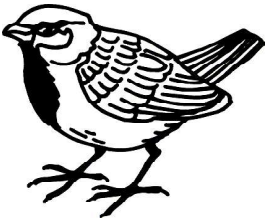
माय के माय कहलावै नानी
जेकरों नानी, ओकरों चानी
जे भी मांगौ, हाजिर छौं ऊ
कत्तो कोय करौ नी कू-कू
जरो करों जों आना-कानी
नानी मुँह पर तुरत कहानी
जब तांय नानी घर में छी
हमरा डर छै केकरो की?
रक्खी दैं सब पोथी-खल्ली
चल निकाल गोटी या गुल्ली
मजा उड़ावैं ननिहालों के
नै मिलतौ गद्दी टालों के।



लकड़ी-चुल्हों

बड़ी काम के लकड़ी-चुल्हा
जेकरों मुँह रहै छै खुल्ला
भरलों राख रहै छै हरदम
बर्तन माँजों, करथौं चमचम
बर्तन की, दाँतो चमकावों
लकड़ी-चुल्हा के गुन गावों
आग-छाँय के कम्मे डर छै
गैस कमी के नै हर-हर छै।





बगरो

कहों गौरैया, फुद्दी, बगरो
कहाँ नै पैवौ, पैवों सगरो
जेकरों नरे पिन्है छै गहना
मादा के तें हेने रहना
खोता मगर बनावै घर में
जिनगी कटै सभै के डर में
जेकरों वास्तें कम नै खुद्दी
बड़ी काम के छै ई फुद्दी
कीट-फतिंगा टप-टप खाय छै
हेनों करि कें फसल बचावै
कोय एकरा बोलौ कुछुवो नी
माय वास्तें तें एकदम लक्ष्मी।



खुदीराम बोष

खुदीराम के बोलवै जय
दुश्मन सें नै लागतौ भय
खुदीराम के बोलवे जय
सब अच्छे होना छै तय
खुदीराम के बोलवे जय
वैरी के होनै छै क्षय
खुदीराम के जय-जय-जय
गैले जो—नै बिगड़ै लय
कहियो नै भूलियै तों हय
खुदीराम के जय-जय-जय।

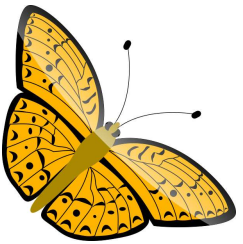


महेन्दर गोप

बोलें वीर महेन्दर गोप
चानन-चीर महेन्दर गोप
दुश्मन के छाती पर हेनों
बिज्जल तीर महेन्दर गोप
के सलाम नै ठोकै हुनका
हेनों वीर महेन्दर गोप
झेलम-कृष्णा-सिंधु-सतलज
गंगा-नीर महेन्दर गोप।

हिन्दी बाल-कविताएँ

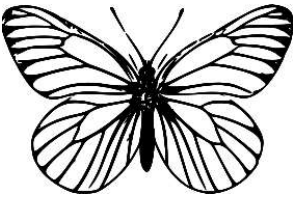


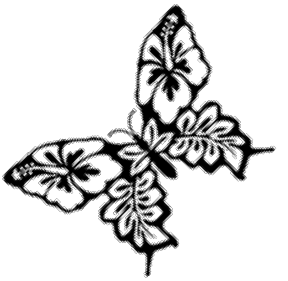




तितली

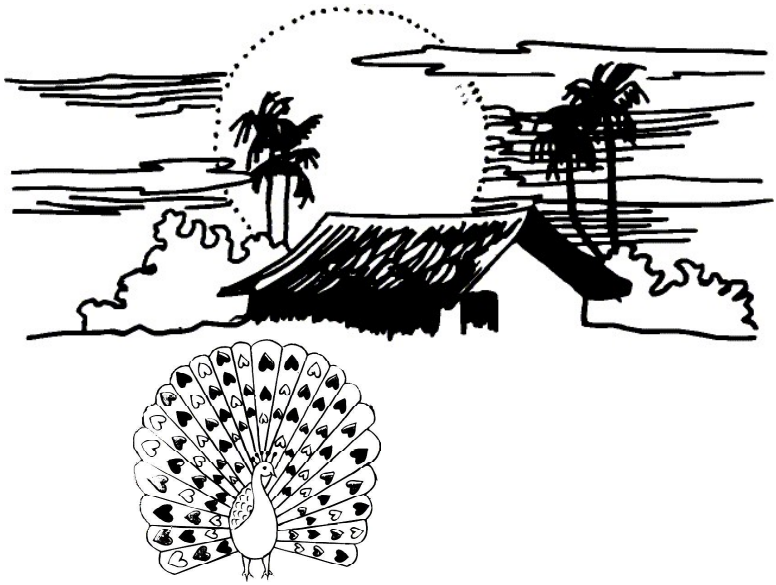
तितली नीली, पीली, काली
भिन्न-भिन्न आकारोंवाली
रंगों से ही पंख सजाए
करती फूलों की रखवाली
गर्मी हो या बारिश के दिन
तितली नाँचे ताक धिनक, धिन।





वर्षा

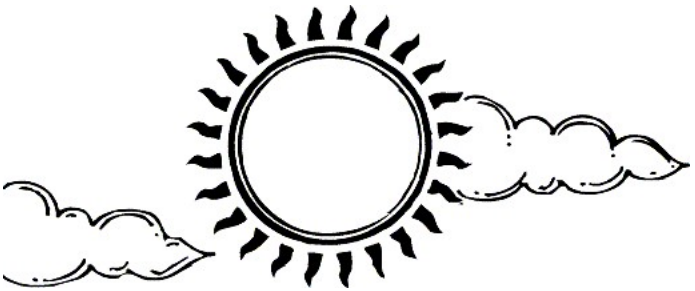
नाँच रहे जब मोर-पपीहा
अपनी ही भाषा में, हा-हा
समझो सावन-भाद्र समय है
किसको अब सूरज का भय है
नदी उफनती, जंगल गाए
इन्द्रधनुष नभ में मुस्काए।



वसंत

कोयल ने जब राग सुनाया
ले वसंत को फागुन आया
खिलने लगे कमल पोखर में
रंग उड़े जाते घर-घर में
चंदनवाली हवा ससरती
रेशमवाली धूप पसरती
अमराई में मंजर-मंजर
बने हुये हैं खुशबू के घर।





ग्रीष्म

धूप कड़ाके की, आगिन है
दादी कहती, यह बाघिन है
सूरज नभ से आग उगलता
बाहर जाना नहीं सुहाता
सूरज पीछे लगा हुआ है
डर से छाता छिपा हुआ है।



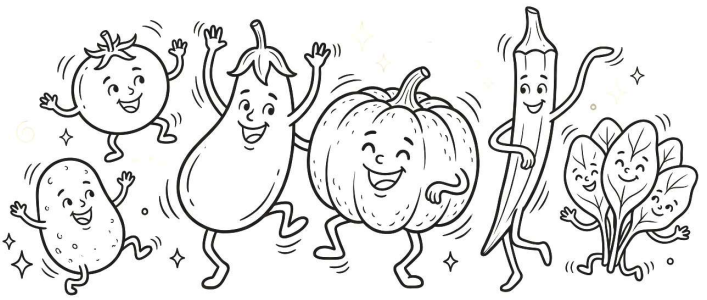
नानी-दादी

दादा, दादी, नाना, नानी
एक साथ ही चार कहानी
चारो मक्खन, मिसरी, घी
डाँट लगाते कभी-कभी
लेकिन इनकी डाँट दूध है
बिना लिए कुछ सूद-सूद है।



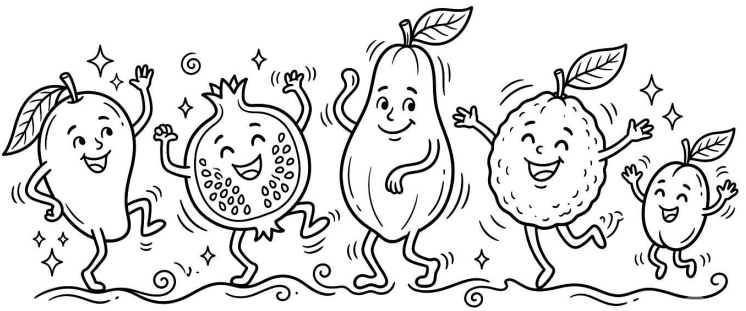
बैगन-ओल

लाल टमाटर, आलू, कंद
कविता में जैसे हो छंद
कद्दू, बैगन, पालक साग
जो खा पाए, उसका भाग
सतपुतिया के साथ परोल
गर्मी आते ही सब गोल
चढ़ जाए भिंडी का मोल
चिढ़ा रहा मुँह, देखो ओल!



पका पपीता

फल में सबसे सुंदर आम
तब जाकर जामुन का नाम
पका पपीता और लताम
भले चुकाना हो कुछ दाम
लेकिन पहले चुनो अनार
अगर तुम्हें जीवन से प्यार।



सीख

क्रोध आग है, पकड़ो मत
यश पाओ तो अकड़ो मत
ज्ञान मिले तो झुकता चल
दुर्गम पथ पर चलता चल
बड़े मिले तो दो सम्मान
गुरु को पिता से कम न मान
पिता, प्रार्थना, गान, समझ
माँ को तुम वरदान, समझ।





किसका साथ निभाओगे

किसको दोस्त बनाओगे तुम?
किसका साथ निभाओगे तुम?

जो जंगल को काटे-जारे
दीन-दलित-दुखिया को मारे
सही बात से पल्ला झाड़े
न्याय नीति के दाँत उखाड़े
जिसका नाता भेदभाव से
काम निकाले पेंच-दाव से
उसको दोस्त बनाओगे तुम?
उसका साथ निभाओगे तुम?

साथ निभाना, जो सज्जन हैं
सही अर्थ में जन-गण-मन हैं
जो लाला हो, भगत, तिलक भी
जिनकी बातों पर न शक हो
सत्य-न्याय पर मर-मिट जाते
वन्दे मातरम् गाते-गाते
उनको दोस्त बनाओगे तुम
उनका साथ निभाओगे तुम!



आभा पूर्वे : एक संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि : २३ अक्टूबर १९६४ ई.
जन्म स्थान : भागलपुर
माता का नाम : जीवनलता पूर्वे
पिता का नाम : रूद्रदत्त पूर्वे
शिक्षा : एम.ए.(गोल्ड मेडल), पी-एचडी
प्रकाशन : देश भर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित संकलनों में रचनाएँ : चम्पा फूलै डारे डार, आधुनिक अंगिका काव्य कोश, हे दशरथ के राम आदि दर्जनाधिक संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित
सम्पादन : 'नया हस्तक्षेप' (अनियमितकालीन पत्रिका) के अलावा १. गीत-गंगा (अंगिका गीत-संग्रह), २. नवगीतकार मधुसूदन साहा, ३. अर्द्धनारीश्वर (हिन्दी कहानियों का पंजाबी अनुवाद), ४. जीवनलता पूर्वे : शांत नदी की अनंत यात्रा (अंग महिला साहित्यकार संसद, भागलपुर) ५. अंगिका लोकसाहित्य : एक अध्ययन (अंगिका संसद, भागलपुर), ६. केकरोॅ चाँद केन्होॅ चाँद (अंगिका संसद, भागलपुर), ७. खोई हुई लड़की का खत (अंगिका संसद, भागलपुर), ८. डॉ. अमरेन्द्र : व्यक्तित्व और वागर्थ (कामायनी, भागलपुर), ९. डॉ. अमरेन्द्र : संदर्भ और साहित्य (समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली), १०. कर्ण महाकाव्य : संवेदना और रूप-शिल्प (समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली), ११. अंगिका लोकगीत

प्रकाशित पुस्तकें : १. अंतहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास), २. गुलबिया (अंगिका उपन्यास), ३. कुँवर विजयमल (हिन्दी उपन्यास), ४. चन्दन जल न जाए (कहानी-संग्रह), ५. शरीष की सुधा (कहानी-संग्रह), ६. जब-जब झरे शृंगार (दोहा-संग्रह), ७. गुलमोहर का गाँव (कविता-संग्रह), ८. नागफनी के फूल (गजल-संग्रह), ९. शिशिर की धूप (कविता संग्रह), १०. नमामि गंगे (कविता-संग्रह), ११. ताँका शतक, १२. मंदोदरी (अंगिका प्रबंध काव्य),१३. आकाशगंगा(हायकू), १४. ऋतुरंजन (कविता संग्रह), १५. अंगिका व्याकरण आरो रचना कला (सह-लेखन), १६. कर्ण महाकाव्य का सौन्दर्य सौष्ठव, १७. अंगिका काव्यशास्त्र (सह-लेखन), १८. हे माय गांग (कविताएँ), १९. वंदे मातरम् (अंगिका नाटक), २०. वापसी (लघु अंगिका उपन्यास), २१. मकै रोॅ लावा (बाल-कविता संग्रह)

सम्पर्क : शरतचंद पथ, मशाकचक, भागलपुर (बिहार)